thou fo|k f'kfoj
fnukad 15-04-08 ls 18-04-08
vH;n; lLFkku vNkVh] ftyk nxZ

सर्वप्रथम श्री सोम जी ने कार्यशाला के आयोजन के बारे में संक्षिप्त कार्ययोजना के बारे में बात की । उसके पश्चात् श्री पवन जी का परिचय कराया । श्री पवन जी सिद्ध संस्थान मसूरी से हैं । तथा आपने शिक्षा के क्षेत्र में बहुत से प्रयोग एवं शोध किए हैं । आपका शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ज्यादा अनुभव है । उसके बाद कार्यशाला की शुरूआत श्री पवन जी के उदबोधन से शुरू हुआ । श्री पवन जी ने अपनी बात अपने द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किए गए शोध एवं अनुभव के बारे में बातचीत की । सबसे पहले उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में अपने द्वारा किए गए कार्य के बारे में अनुभव सुनाए । उन्होने बताया कि कुछ सामान्य प्रश्न होते हैं जिसके उपर हम कभी सोचने का प्रयास ही नहीं करते । यदि उन प्रश्नों को सोंचे तो बहुत ही महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकलते हैं जो हमे सोचने पर मजबूर कर देते हैं । उन्होंने अपनी शुरूआत कुछ शब्दों से शुरू किया । दो शब्द ज्यादा सुनने को मिलता है विकसित एवं पिछडा । विकसित शब्द का प्रयोग 1950 में सबसे पहला हुआ । हैरी हयूमन में सबसे पहले विकसित शब्द का प्रयोग किया । उन्होंने जो विकसित नहीं है उसके लिए अंडर डेवलप का उपयोग किया । लेकिन हमने अंडर डेवलप का उपयोग पिछडे के रूप में किया है । जबकि अंडर डेवलप का मतलब पिछडा नहीं होता । इसी तरह उन्होने अपनी चर्चा की शुरूआत दो तरह के शब्दों से किया । जिनका विवरण निम्नानुसार है –

अर्थ	शब्द
समझना	सहमत / असहमत होना
विकसित	पिछड़ा
भिन्न	विपरित
जानना	मानना
निहित मूल्य	आरोपित मूल्य
निरपेक्ष विश्वास	सापेक्ष विश्वास
वास्तविकता	विषय
लक्ष्य	माध्यम
ज्ञान / समझ	जानकारी
क्यों / क्या	कैसे
जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि	जैसी सृष्टि वैसी दृष्टि
प्रेरित होना	प्रभावित होना
स्वतंत्रता	फ्रीडम
जिम्मेदारी	अधिकार
समझना	सीखना
समझना	सुनना / पढना / लिखना

शिक्षित	साक्षर
होना	लगना
प्रस्ताव	उपदेश
स्थिति	गति
है	दिखाना
वास्तविकता	मान्यता
श्रेष्ठता	विशेषता
पूरकता	प्रतिद्वंदिता
होना	दिखना / दिखाना / लगना
व्यवस्था	शासन
प्रस्ताव	उपदेश
तृप्त होना	करके तृप्त होना
मानव के लिए कार्यक्रम	कार्यक्रम के लिए मानव
मूल्य	कीमत
भिन्न	विपरित
अंग्रेजी	अंग्रेजियत

उपर्युक्त शब्दों को देखने से पता चलता है कि हम इन शब्दों को विपरीत अर्थों में प्रयोग करते हैं । लेकिन ये शब्द वास्तव में विपरीत शब्द नहीं है । हम द्वंद में जी रह हैं । पूरा का पूरा माडल पदार्थावस्था में खड़ा है। अस्तित्व को देखते हैं तो हमें चार अवस्थाएं दिखाई देता है – पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीव अवस्था एवं ज्ञान अस्था अर्थात मानव । इसके अलावा कुछ और नहीं है। छोट से लेकर बडे तक तय कर रहे हैं कि सुविधा का सारा सामन पदार्थ से बना है । आज बच्चों में यह बैठ गया है कि सारा कुछ मानव ही बनाता हैं । लेकिन इसे मानव ने बनाया नहीं है केवल रूपान्तरित किया है । मानव पदार्थ को बनाता नहीं है । मानव में शक्ति नहीं कि वह पदार्थ को बनाए । हम पदार्थ का उपयोग करते है । मानव निर्माण की प्रक्रिया है में है निर्माता नहीं है । संसार में दो तरह की चीजें है एक है मानव निर्मित तथा दूसरा प्रकृति निर्मित । पदार्थ कभी नस्ट नहीं होता वह केवल परिवर्तित होता है । पदार्थ का केवल रूप परिवर्तित होना है गुण परिवर्तित नहीं होता । जैसे लोहा का परिवर्तित रूप गाडी, मोटर आदि है । इसको समझने की आवश्यकता है । नहीं तो यह चलता रहेगा । विकसित देशों ने संसाधनों का ज्यादा उपयोग किया है । कुल संसाधन का 80 प्रतिशत उपयोग विकसित देश कर रहे हैं । धरती तो एक है यदि अमेरिका जैसा सभी बनना चाहे तो कई धरती की आवश्यकता होगी । यह बात बच्चों का बताना चाहिए । हम यह काम शिक्षा के माध्यम से कर सकते हैं । मान्यता को सही करना है। यदि गलत जानेंगे तो गलत करेंगे । दुनिया की सारी सुविधा पदार्थावस्था से बना है । इसमें गोथ नहीं है । ग्रोथ केवल प्राणावस्था में ही है । पदार्थावस्था में केवल रूप परिवर्तित कर सकते हैं । पेड काटकर कोयला बना सकते हैं, लोहे को गलाकर कुछ और बना सकते हैं आदि । सारे पेट्रोलियम को हम

परिवर्तित कर सकते हैं । बदलाव होता है । जंगल में पेड गिरता है दब जाता है फिर उससे हमें कोयला, पेट्रोलियम आदि प्राप्त होता है । यह प्राकृतिक रूप से होता है । इसके बनने से पर्यावरण को नुकसान नहीं पहुचता । लेकिन हम जो उत्पाद बनाते हैं उससे प्रदूषण पैदा होता है । यह बात बच्चों का बताना चाहिए । हमें आपने काम करने के तरीके में बदलाव करना होगा । प्रकृति में परिवर्तन आवर्तनशील प्रक्रिया से हो रहा है । अर्थात परस्पर पूरकता के आधार पर हो रहा है । पत्ते मिट्टभ में परिवर्तित होता है इससे मिटटी व पेड दोनों ही विकसित होता है। पेड बिना मिट्टी के सरवाईव नहीं कर सकता । जो भी होता है पूरकता के लिए होता है । हम जो भी देते हैं वह वेस्ट होता है । यह बात सासेचने की है। जैविक खेती आवर्तनशील प्रक्रिया है । आदिवासी क्षेत्र में कुछ वेस्ट नहीं होता है। क्योंकि वे जो भी करते हैं वह आवर्तनशीलता की प्रक्रिया में होता है । और कुछ होता भी है तो वह इतना कम होता है कि धरती इसे पचा सकती है । इन बातों का ज्ञान बच्चों का कराना होगा । गलत मान्यताओं को सही मानकर न जिये । हमारे बच्चे वास्तविकता से दूर हैं । नकल कर दूसरों की तुलना करते हैं । इससे बच्चों में हीन भावना आती है । आज हमारे बच्चे हीनभावना से ग्रसित हैं । असल चीज वास्तविकता है । आम तौर पर जिसे हम शिक्षा कहते हैं वह गति आधारित होता है । अर्थ मेरे अंदर होता है सह स्थिति है उसे जो शब्द देता हूॅ वह गति है। अर्थ स्थिति होता है । स्थिति को नहीं जानते । ये दोनों विपरित नहीं है । मूल तत्व कौन सा है स्थिति या गति । हमारा सारा ध्यान गति पर ही सीमित है । यदि स्थिति है लेकिन गति नहीं तो भी कोई मतलब नहीं है । यह स्थिति है तो गति होगी ही । लेकिन गति है तो स्थिति होगी ही यह आवश्यक नहीं है । अर्थ है लेकिन जानते नहीं या जानते है लेकिन आता नहीं । ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हमारी स्थिति व गति के पीछे भेद नहीं कर पाते । ऐसा करेंगें तो हमारा ध्यान स्थित व गति के अंतर पर जायेगा । हम जो है उसी को देखते हैं इसे अर्थ को नहीं देखते । मूल्यांकन एवं पढ़ाई में परिवर्तन होना चाहिए । हमें स्थित पर ध्यान देना होगा । मेमोरी को कैसे देखेंगे, इसे किस तरह इस्तेमाल करेंगे । मूल्यांकन में केवल गति पर ध्यान देते हैं । सम्मान का केवल दिखावा करते हैं । सम्मान का दिखना गति होता है स्थित नहीं होता । हम ऐसे लोगों का जानते हैं जिनकी आदत गति पर इतना अधिक होता है कि दूसरा शाबाशी देता है तो उसे ठीक लगता है। सारा काम सुख पाने के लिए होता है । यह खोखलापन सम्मान में पैदा कर रहा है । स्थिति में ईमानदारी है । अपने साथ ईमानदारी और दूसरों के बेईमानी करें यह कहां तक ठीक है । स्थिति ठीक है । यदि स्थिति होगी तो गति होगी ही । लेकिन गतिहीन हो तो स्थिति ठीक हो ऐसा संभव नहीं हैं । हमें यह काम करना है कि स्थिति व गति के अंतर को समझना । अभी बात केवल स्थिति पर ध्यान देना है । अभी सब कुछ केवल गति पर ही है । इसलिए अंदर खोखलापन है। अभी तक केवल सीखना हुआ है । समझा हुआ समझाएगा। सीखा हुआ सीखएगा । किया हुआ करायेगा । शिक्षक केवल सूचना का आदान प्रदान करता है । शिक्षक पढ़ाने के बाद अतृप्त रहता है। बच्चे पढ़कर बोर होते हैं । ऐसा इसलिए होता है क्योंकि सीखाने का प्रयास केवल गति पर ही है । शिक्षक का काम ध्यानाकर्षण कराना ही है । कुछ वास्तविकताएं है

जो तो है ही आप जाने या न जाने । शिक्षक को वास्तविकता को जानना है तथा उसका ध्यानाकर्षण बच्चों को कराना है । ध्यान देना बच्चे का काम है शिक्षक का काम केवल ध्यानाकर्षण कराना है । सम्मान को अर्थ को ध्यानाकर्षण कराना शिक्षक का काम है सम्मान को समझने का काम बच्चे का है । हम दूसरों को निष्कर्ष निकालकर देते हैं । निष्कर्ष निकालकर बच्चों का परोसते हैं । शिक्षक का केवल ध्यानाकर्षण कराना होना चाहिए निष्कर्ष बच्चे खुद निकाले । वास्तविकता का ज्ञान होने पर बच्चे खुद निष्कर्ष निकाल सकता है । बच्चे झूठ क्यों बोलते हैं । बच्चों से पूछा गया तो जवाब आया कि डांट खाने, मार खाने, शिक्षक की शाबाशी पाने इत्यादि के कारण गिनाए । इस प्रकार बच्चे का झूठ बोलने के फायदे पता है । इसके बाद बच्चों से सच बोलने के फायदे पूछा गया। उन्होंने कहा कि विश्वास के लिए, सम्मान के लिए, यह टिकाउ होता है, झूठ तो एक दिन पकडा जाता है आदि । इस प्रकार बच्चों से कहा गया कि सच बोलना चाहिए कि झूठ । बच्चों ने निष्कर्ष निकाला हमेशा सच बोलना चाहिए । यह एक सर्वे कक्षा 7 के बच्चों के साथ किया हुआ है । इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि बच्चों को केवल सत्य का ध्यानाकर्षण कराया जाए निष्कर्ष बच्चों पर छोड दिया जाए । यदि बच्चों को सच का ज्ञान हो जाता है तो वह गलत निष्कर्ष कभी नहीं निकालते । बच्चों को घटना को बताया जाए ध्यानकर्षण कराया जाए निष्कर्ष न दिया जाए । अभी हम इसका उल्टा करते हैं । इसी प्रकार सभी विषयों का ज्ञान कराया जा सकता है । इतिहास पढाते समय तीन इतिहासकारों के विचार उस इतिहास के बारे में बता दिया जाना चाहिए कि इनका कथन इसके लिए यह है, इनका कथन इसके लिए यह है । इन लोगों का विचार इस प्रकार है । अब बच्चों से पूछा जाए कि इसमें आप क्या सोचते है, इस पर आपका क्या विचार है । इससे बच्चों में विचारशीलता भी बढ़ेगा । क्योंकि किसी एक ही घटना को देखने का सभी लोगों का नजरिया एक समान नहीं होता । क्योंकि हम देखते हैं कि समाचार पत्रों में एक ही घटना को अलग–अलग समाचार पत्र अलग–अलग तरीके से प्रस्तुत करता है । इस प्रकार बच्चों की इस मान्यता को भी हटाया जा सकता है कि जो कुछ अखबार या पुस्तक में लिखा होता है वही अंतिम सत्य है । जो शास्वत है उसे ही ज्ञान कहेंगें । शास्वत कभी बदल नहीं सकता । शास्वत देश, काल, परिस्थिति में एक समान होता है । जानना वास्तविकता को जानना तथा मानना किसी मान्यता को मानना है जो अन्यत्र मान लिया जाता है इसे ठीक करना । यह ठीक हो सकता है ध्यानाकर्षण के द्वारा । स्कूल से लेकर घर तक विशेष होने की कोशिश करते हैं इसलिए बच्चा विशेष होने के लिए तडपता रहता है। दूसरों से तुलना में विशेषता है । जो सही है उसको पहचानना श्रेष्ठता है । भिन्नता गति में होती है । भिन्नता अर्थ में स्थिति मे नहीं होता है । किसी बच्चे से पूछा जाए तुम क्या होना चाहते हो तो 90 प्रतिशत बच्चे क्या करना चाहते है इसका उत्तर देते हैं । उन्हें होने और करने में अंतर नहीं मालूम । करने को की पहचानते हें । पहचान होना से बने है । यदि यह देखते हैं तो हम दूसरों के पूरक होते हैं । प्रतिद्वंदिता नहीं होती । श्रेष्ठता होना है करना नहीं । श्रेष्ठता पूरकता होता है । अभी चीज है लेकिन हम उसे समझते नहीं । सापेक्ष तुलना में आधारित हैं । प्रतियोगिता शब्द को लें । प्रतियोगिता का आधार अभी

तुलनात्मक है सापेक्ष है । प्रतियोगिता होने में निरपेक्ष है । अपने का पहचानना, श्रेष्ठता के आधार पर । अर्थ को पहचानना होगा फिर जीना होगा । कुछ शब्दों के लिस्ट जो पहले दिया हुआ है इस पर चर्चा करते हैं । समझना और सहमत होना । इन दोनों को एक ही पर्यायवाची मानते हैं । जबकि समझना अलग चीज है सहमत होना अलग । समझना स्थिति है जबकि सहमत होना गति है । अभी हमारी शिक्षा में ज्यादा जोर गति पर ही है । स्थिति पर ध्यान ही नहीं देते हैं । हमारी शिक्षा स्थिति आधारित होना चाहिए न कि गति आधारित । हम एक दूसरे की प्रतियोगिता में होते हैं । यह स्वयं नहीं करते बाहर से होता रहता है । मान लिया गया है कि जिसके पास सुविधा है वही सुखी है । सुविधा हमारी आवश्यकता है । आवश्यकता से सुविधा की बात आती है जो ऐसा नहीं है । अभी तक लक्ष्य निश्चित नहीं है । माध्यम मको ही लक्ष्य माना है। क्योंकि इसमें हम भेद नहीं कर पाते । शिक्षा में यह करना होगा कि लक्ष्य क्या है और माध्यम क्या है यह स्पष्ट करना होगा । सुखी होना हर मानव की मौलिकता है । लेकिन हमने सुविधा एवं सुख को एक ही मान लिया है । इसलिए सारा ध्यान गति पर ही होता है लक्ष्य की पहचान नहीं होती है । सुविधा का मतलब यह नहीं कि इसे छोड दिया जाए । हम केवल गति के आधार पर पूरा चाहते है। माध्यम का ध्यानाकर्षण सुविधा को मानकर करते हैं लक्ष्य को मानकर नहीं करते हैं । दोनों अलग अलग वास्तविकता है यह देखा जाए ।

हमें किसी चीज को मानना नहीं है । जानना है । जानने के लिए जॉचना होगा । यह तीन प्रकार से हो सकता है । पहला निरीक्षण, दूसरा परीक्षण तथा तीसरा सर्वेक्षण । निरीक्षण का मतलब है स्वयं में जांचना । परीक्षण का मतलब है परस्परता में जांचना तथा सर्वेक्षण का मतलब है सर्वाभौम में जांचना । जांचना समग्र में होगा । जांचना समझ से होगा । समझ के साथ जीकर देखना कार्य व व्यवहार में होगा । कार्य व्यवहार से प्रकृति में संतुलन, समाज में अभय तथा परिवार में समृद्धि होगी । यह होगा स्वयं के प्रति आश्वस्त होने से । यह हमारी आवश्यकता है । सुख विश्वास है, स्वयं का स्वयं के प्रति, और संबंधों में । विश्वास एवं सम्मान निरंतर चाहिए । प्रकृति में चार अवस्थाएं है – पदार्थ अवस्था, प्राण अवस्था, जीवन अवस्था तथा ज्ञान अवस्था । यह एक स्थिति है । यह है और लगतार है । इनके बीच एक संबध है । पूरकता का सहअस्तित्व का संबंध है । मानव किसी परिवार में होगा, परिवार किसी समाज में होगा तथा समाज किसी व्यवस्था में से चलता है जिसे मानवीकृत व्यवस्था करते हैं । मानव का मानव के साथ संबंध समझदारी से नहीं होने के कारण फैमिलीवार्मिंग तथा प्रकृति के साथ ग्लोबलवार्मित निर्मित हो रही है । समझदार मानव किसे कहेंगे । समझदार मानव – समझदार मानव वह है जो मानव व प्रकृति के साथ तालमेलपूर्वक जीने की योग्यता से संपन्न मानव । मानव में जीने की चाहत ही है । इस चाहत को योग्यता में बदलना ही शिक्षा का दायित्व है । जो जैसा है उसे वैसा जान पाने की योग्यता । जो जैसा है वैसा पहचान पाते हैं तो वैसा जी पाते हैं । स्वयं को जानने के लिए केवल दो ही प्रश्न है– क्यों जीना है ? कैसे जीना है ? इसका प्रमाणित होना उसे मल्टीपल करना है। इसे डिलीवर कर पाना ही शिक्षा है । जो जैसा है उसे वैसा समझ पाने का नाम है समाधान । जानना ही समाधान है। जो जैसा है

उससे अन्यथा मान लेना ही भ्रम है । मानना सही भी हो सकता है और गलत भी हो सकता है । इसमें शंका बनी रहती है । स्वयं के आधार पर जी नही पाते । इसको समझने का आधार चार अवस्थाएं है ।

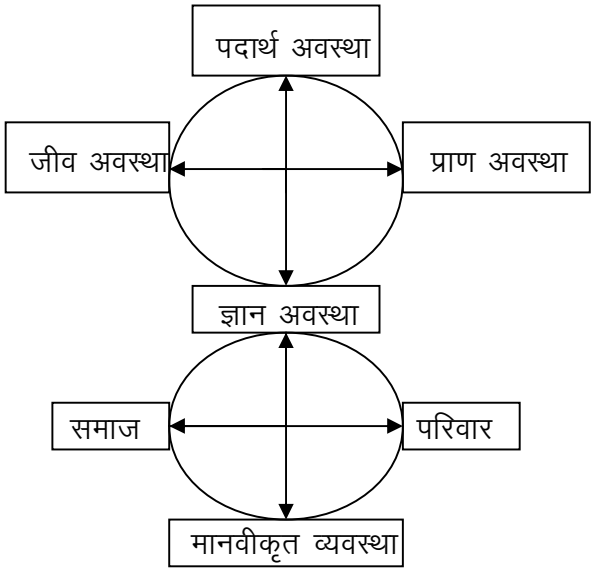

मानना नहीं

↓

जानना है

↓

निरीक्षण – स्वयं में
परीक्षण – परस्परता में
सर्वेक्षण – सार्वभौम में

↓

समझ

↓

कार्य → प्रकृति में संतुलन
परिववार में समृद्धि

व्यवहार → उभयतृप्ति

स्वयं के प्रति आवस्त

1. अस्तित्व में व्यवस्था है ।
2. अस्तित्व में सहअस्तित्व है।
3. परस्पर पूरकता से विकास है (आवर्तनशीलता)।
4. हर ईकाई स्वयं में व्यवस्था है तथा समग्र व्यवस्था में भागीदार है ।
5. मानव भी व्यवस्था में जीना चाहता है। मूल रूप से गलती नहीं करना चाहता ।
6. हर मानव दो वरदान से संपन्न है –1. कल्पनाशीलता 2. कर्मस्वतंत्रता
7. हर मानव में वास्तविकता को समझने की मूल/मौलिक क्षमता मौजूद है ।
8. समस्त वास्तविकताएं (आचरण) निश्चित है ।
9. कल्पनाशीलता का तृप्ति बिन्दू अनुभव है ।
10. कर्मस्वतंत्रता का तृप्ति बिन्दू मानवीय व्यवस्था है ।
11. ऐसा हर बच्चा कर पाए यही शिक्षा व्यवस्था है ।

आवश्यकता की पहचान ठीक से हो जाए तो गलती नहीं होगी । मानव का अध्ययन ही मानवीय शिक्षा है। शब्द एक ध्वनि संकेत है । एक शब्द का केवल एक अर्थ होना चाहिए। अर्थ अस्तित्व में निश्चित है । इसलिए समझ सबकी एक होगी । मान्यताएं अलग–अलग होती है । समझ सार्वभौम होता है, इसलिए मूल्य सार्वभौम होगा, मानवीय होगा । गति स्थानीय हो सकता है लेकिन स्थिति या अर्थ सार्वभौम होता है । स्थिति से प्रेरणा मिलती है । गति से प्रमाणित होते हैं । आज अंग्रेजी के नाम पर अंग्रेजियत हो रही है । हम अंग्रेजियत से प्रभावित हैं । अपनी शिक्षा में अंग्रेजियत एवं अंग्रेजी में अंतर करना होगा । ऐसा टेक्टसट बनाना चाहिए जिसमें मान्यताओं को चैलेंज हो । भाषा का अधिमूल्यन न हो । इसके उपर मूल्य को अधिरोपित नहीं करना चाहिए । अंग्रेजी को केवल भाषा के रूप में ले तो कोई समस्या नहीं होगी । अभी हम केवल अपनी को सहमत कराना चाहते है, स्वीकृत कराना चाहते हैं । हमें सहमत नहीं होना है समझना है। अभी हम सहमति या विरोध में होते हैं । समझने की बात अभी नहीं है । हमारा प्रश्न समझ को एक्सप्लोर करने के लिए होना चाहिए । समझने के लिए, जांचने के लिए सहमति या असहमति होना चाहिए । संसार में कोई भी विपरित नहीं होता भिन्नता हो सकती है । इसमें पूरकता होती है। विपरित में पूरकता नहीं होता । इसके बाद स्थित एवं गति के उपर उदाहरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है ।

अर्थ	शब्द
समझना	सहमत/असहमत होना
विकसित	पिछड़ा
भिन्न	विपरित
जानना	मानना
निहित मूल्य	आरोपित मूल्य
निरपेक्ष विश्वास	सापेक्ष विश्वास
वास्तविकता	विषय
लक्ष्य	माध्यम

ज्ञान / समझ	जानकारी
क्यों / क्या	कैसे
जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि	जैसी सृष्टि वैसी दृष्टि

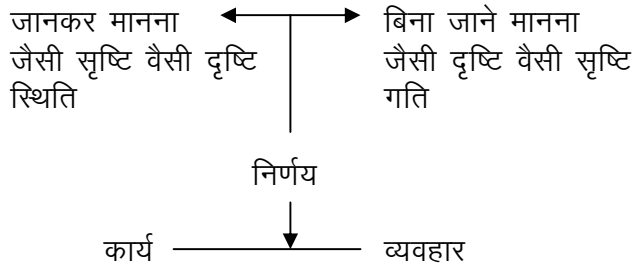

किसी वर्तमान प्रभाव से प्रभावित न होना ही स्वतंत्रता है। दबाव से मुक्त होना ही स्वतंत्रता है। शब्द का अर्थ निकालते हैं तो मान्यता चिपकी हाती है । प्रभावित शब्द महत्वपूर्ण नहीं है। प्रभाव किस अर्थ में कहा जा रहा है यह महत्वपूर्ण है । गति से प्रभावित होते हैं तो यह बाह्य होता है । दूसरों के द्वारा या स्वयं दूसरों की स्थिति से प्रभावित होना प्रेरित होना है। प्रेरित होने से शक्ति मिलती है । किसी से प्रभावित होना उसके आरोपित मूल्य से प्रभावित होना है, प्रेरित होना नहीं है । यदि हम किसी के कार्य को देखकर प्रभावित होते हैं तो वह प्रेरित होना है । पानी इसलिए बचाना है कि सारे लोग ऐसा करते हैं या ऐसा करने से लोग अच्छा कहेंगे सम्मान करेंगे तो यह प्रभावित होना है । लेकिन यदि हम पानी क्यों बचाना है यह समझकर पानी बचाए तो यह प्रेरित होना है । समान्यतः लोग प्रभावित होना और प्रेरित होना को एक ही मानते हैं । जबकि इसमें बहुत अंतर है। प्रभावित होना गति है, जबकि प्रेरित होना स्थिति है । प्रभाव में गति का नकल होता है प्रेरणा में कोई नकल नहीं होता । अभी स्वतंत्रता के रूप में फिडम का उपयोग करते हैं । स्वतंत्रता एवं फ्रीडम के अंतर को समझा जाए । स्व +तंत्र +ता अर्थात जैसा मैं मूल रूप में मौलिक रूप में हॅू वैसा ही हो जाए यह स्वतंत्रता है। जो मूल्य है उसको समझकर जीना है । स्वतंत्रता में जिम्मेदारी आती है । फ्रीडम में अधिकार का बोध होता है । समझ के अनुसार जीना ही जिम्मेदारी है । फ्रीडम में जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि की बात आती है । सृष्टि मानकर जीता हॅू तो मुझे अधिकार मिलता है । स्वतंत्रता में स्व व जिम्मेदारी जुडा रहता है जबकि फ्रीडम में अधिकार को प्राप्त करना है । उसके अनुसार चलना है । जिम्मेदारी का कोई घेरा नहीं है । जबकि अधिकार निश्चित होता है ।

समझदारी – मानव, परिवार, समाज, प्रकृति में व्यवस्था को समझना ।
ईमानदारी – समझ को प्रमाणिता करने के प्रति निष्ठा ।
जिम्मेदारी – समझ की रौशनी में अपनी कैसे जीना है की स्पष्टता, जीने की स्वीकृति ।
भागीदारी – जिम्मेदारी का निर्वाह ।

समझदारी से अधिकार संपन्न होते हैं । स्वअुनशासन से अधिकार पाते हैं । स्वतंत्र होनाही मेरा अधिकार है । मानवीय मूल्य स्थापित है । यही अधिकार मानव के सुखपूर्वक जीने का अधिकार संपन्न होना हैं। इसी तरह सीखना एवं समझना है । सीखना अभ्यास से होता है । किसी चीज को बार–बार अभ्यास कर सीख सकते हैं । इसमें बोलना, सुनना अधिक होता है। हमारा केन्द्र समझना होना चाहिए । लेकिन हम बालना, सुनना, पढ़ना, लिखना पर ही उलझकर रह गए हैं । लिखना, पढ़ना, सुनना एक साधन है टूल है। टूल का उपयोग करके हम समझते हैं। सुनकर समझना ही सुनना होता है । लगना, दिखना या दिखाना अलग चीज है । जो है वह है ही जो मान लिए हैं वह दूसरा है । हमारी शिक्षा में चाहिए की भाषा का उपयोग होता है। नैतिक शिक्षा केवल उपदेश होता है जिसमें केवल चाहिए भाषा का उपयोग होता है । चाहिए वाला शब्द शिक्षा में नहीं होना चाहिए । प्रस्ताव रखा जाए, दिखाया जाए । शिक्षक सही का प्रस्ताव रखें और उनकी ओर ध्यानाकर्षण कराए । यही शिक्षक का रोल या उद्देश्य होना चाहिए । प्रश्न एक बहुत बड़ा टूल है जिसके माध्यम से ध्यानाकर्षण कराया जा सकता है । हम प्रश्न को एक टेक्निक के रूप में उपयोग कर सकते हैं । केवल प्रश्न के माध्यम से ध्यानाकर्षण कराया जा सकता है । ध्यान स्वयं को देना होता है । प्रश्न दो प्रकार का होता है – बंद प्रश्न एवं खुला प्रश्न । बंद प्रश्न वह होता है जिसका केवल एक ही उत्तर होता है जिसका उत्तर बच्चा समझकर देता है । खुला प्रश्न शिक्षक ध्यान में लाए तो बच्चों का ध्यान स्थिति की ओर ले जा सकता है । यह काम शिक्षक कर सकता है । पुस्तक इसके लिए सहायक हो सकता है । अपनी राय, विचार आदि प्रश्न खुला प्रश्न है । शिक्षक कैसे प्रश्न का उपयोग करे कि बच्चा अपनी स्थिति की ओर ध्यान दे सके । प्रश्न होने की ओर के लिए ईशारा करना चाहिए । शिक्षक स्थिति की ओर जे जा सकता है यदि प्रश्न खुला हो । बच्चे का उत्तर भले ही सही या गलत कुछ भी हो सकता है । कई बार बच्चा प्रश्न का उत्तर किसी दबाव से कर सकता है । इसको शिक्षक को देखना होगा । ध्यानाकर्षण या ध्यान देने का काम ईमानदारी के बिना नहीं हो सकता । प्रश्न के माध्यम से समझदारी व ईमानदारी पर बात कर सकते हें । बच्चों का ईमानदारी वाला प्रश्न होता है । कुछ प्रश्न बनावटी होता है । जो प्रश्न ईमानदारी से होगी उससे वह समझ पायेगा । बनावटी प्रश्न के उत्तर पर ध्यान नहीं होता, वह उससे समझना नहीं है । जब तक प्रश्न ईमानदारी की नहीं होगी तब तक हमारा ध्यान स्थिति पर नहीं होगी । बच्चों को अपनी मौलिकता का पता चलता है । बच्चों में मान्यता है कि बिना पुस्तक के पढ़ाई नहीं होती । जब भी हम कोई प्रश्न पूछते हैं तो हमारी मान्यता छुपी होती है । हमें उसके बारे में जानना चाहिए । हम प्रश्न बनाते हैं वह समझ की जांच के लिए होता है । लेकिन प्रश्न होता जानकारी पाने वाला । प्रश्न गति से स्थिति वाला होना चाहिए । यह एक मुश्किल काम है । जानकारी व समझ का पक्ष क्या है ? यह स्पष्ट होना चाहिए नहीं तो जानकारी का पलड़ा भारी हो जाता है और समझ का कम । प्रश्न ज्ञात से अज्ञात की ओर ले जाने वाला होना चाहिए । अर्थात शब्द की ओर ले जाना होगा । जैसे पानी किधर से किधर जाता है ? बच्चों की मान्यता है कि पानी उपर से नीचे की जोर आता है । बच्चे को यह दिखाकर कि पानी हिमालय से

निकलकर बंगाल की खाडी में जाता है । और यह बता दिया जाए कि पानी उत्तर से दक्षिण की ओर बहती है । अब बच्चे से प्रश्न किया जाए कि इन दोनों में क्या संबंध है ? इसी प्रकार और कई प्रश्न किए जा सकते है । जैसे– भारत का भौगोलिक बनावट कैसा है ? भारत का उत्तर उंचा है या दक्षिण ? नदि किस ओर से किस ओर बहती है ? यदि बच्चे से प्रश्न पूछा जाए कि दो और दो कितना होता है ? तो उत्तर आएगा चार । इसी प्रकार यह प्रश्न किया जाए कि चार गाए और पांच घोडे कितने हुए ? तो उत्तर आएगा 9 जानवर । यदि कहा जाए तुमने 9 जानवर ही क्यों कहा तो वह कुछ देर सोचता है फिर उत्तर देता है कि योग केवल दो समान ईकाई का होता है इसलिए जानवर एक ईकाई हुआ । बच्चे सारी चीजें पहले से जानते हैं हमको केवल ध्यानाकर्षण कराने की आवश्यकता है । यह काम शिक्षक कर सकता है । बुनियादी बात से नए बात को जोडकर शुरू करें । हर दर्शन का विषय स्पष्ट हो । बुनियाद स्पष्ट होना चाहिए । दर्शन की बैठक में विषय को खडा किया जए । बुनियाद से जोडेंगे तो जुड जायेगा । आधार दर्शन पर खडा होना चाहिए । बच्चों से प्रश्न पूछा जाए कि दो कप चाय बनाने के लिए क्या करना होगा ? उत्तर आएगा पानी, दूध, चाय पत्ति एवं दूध । अब पूछा जाए कि चार कप चाय बनाने के लिए कितनी सामग्री की आवश्कता होगी ? उत्तर आएगा उतना ही । लेकिन मात्रा के बारे में पूछा जाए तो कहेगा कि 4 कप चाय के लिए पहले का दुगुना मात्रा की आवश्यकता होगी । अब पूछा जाए कि पहले वाले चाय का स्वाद ज्यादा अच्छा होगा या अभी वाले चाय का । उत्तर आएगा समान । क्योंकि चाय का अपसी संबंध जितना दो कप के साथ है उतना ही चार कप के साथ । संबंध जैसा है वैसा ही रहेगा । वह बदलेगा नहीं । जिसे मानवीय भाषा में संबंध कहा जा रहा है उसे गणितीय भाषा में अनुपात समानुपात कहते हैं । इस तरीके से गणित के अनुपात समानुपात की बातें पढ़ा सकते हैं । इस प्रकार प्रयोग किया जा सकता है । इससे बच्चा अपने उपर महसुस करने लगता है । यह बाहर का चीज नहीं । इसी प्रकार इतिहास, नागरिकता, आदि सभी विषयों को जीवन से संबंधित करके ज्ञात से जोडकर पढ़ाया जा सकता है । यदि कोई व्यक्ति आकर खान पान, रहन सहन आदि के बारे में प्रश्न करता है तो इससे इतिहास के प्रश्न से संबंधित किया जा सकता है । बदलाव सामान्य रूप से चल रहा है । हर दिन हर समय कुछ न कुछ बदलाव हो रहा है । कभी–कभी खास घटना से बदलाव की दिशा व गति बदल जाता है ।

मानव एक संसाधन नहीं है । भारत सरकार में मानव संसाधन विकास मंत्रालय है । मानव को संसाधन मान लिया गया है । इसमें बदलाव होना चाहिए । मानव को संसाधन कहने से पता चलता है कि मानव उपभोग की चीज है । सबसे पहले यह तय होना चाहिए कि विषय को क्यों बढ़ाया जाए । मेरे रहने या न रहने से मेरे रक्त संबंधी के अलावा किसी और को कोई फर्क नहीं पड़ता तो मैं धरती पर बोझ हूँ। मेरी कोई उपयोगिता नहीं है । बच्चों को उनका मूल्य, उपयोगिता नहीं बताया जाता । मेरा मूल्य क्या है मुझे नहीं पता 20 वर्ष शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी । मुझे अपनी मूल्य पता है कीमत नहीं । सामान्यतः कीमत एवं मूल्य को एक ही माना जाता है । समाधान से सुखी होता हूँ यह शिक्षा में होना चाहिए । समाधान से सुखी होता हूँ इसलिए शिक्षा में

यह होना ही चाहिए । पहले यह तय होना चाहिए कि क्या पढ़ाना है ? क्यों पढ़ाना है ? फिर कैसे पढ़ाना है ? ऐसा करने से समाधान मिलेगा। समाधान मिलने से सुखी होंगे । इसका आधार जीवन विद्या में देखना है ।

श्री साधन जी जो कि जीवन विद्या से लगभग 15 वर्ष से जुडा हुआ है तथा इन्होंने इस क्षेत्र में बहुत कुछ काम भी किये है । इस शिविर में श्री साधन जी ने अपना अनुभव इस प्रकार शेयर किया । मुझे स्कूल कालेजों में पढाने का अनुभव तो नहीं है लेकिन मैंने अपने छोटे भाई को, आसपास के बच्चों को तथा पास के स्कूल में मैंने कुछ काम किया है और उसका अनुभव भी अच्छा रहा है। लेकिन आप लोग शिक्षा से जुड़े हुए लोग हैं इतना अनुभव तो मुझे नहीं है। लेकिन जीवन विद्या से 15 वर्षो से जुडा हुआ हूँ और मैंने बहुत सारे शिविर भी किए हैं । फिर भी यह बात स्पष्ट है कि शिक्षा में कुछ परिवर्तन होना चाहिए । उस मुद्दे पर ध्यान चाहूँगा । मानव को शिक्षा की जरूरत है इसके अलावा किसी और को शिक्षा की जरूरत नहीं है । मानव को जंगल में छोड देगें तो वह बीमार पड़ जायेगा । हमारी जगह जानवर अपने को बचाकर रख सकता है। मानव नहीं कर सकता । क्योंकि पदार्थ, पेड–पौधे, पशु–पक्षी एवं मानव में स्थिति अलग अलग है । पदार्थ अवस्था परिणाम अनुषंगी है । पेड पौधे बीनानुषंगी है । पशु पक्षी वंशानुषंगी है । मानव संस्कार अनुषंगी है। मानव को दो वरदान प्राप्त है । कल्पनाशीलता एवं कर्मस्वतंत्रता । शिक्षा संस्कार देती है । इसकी तृप्ति बिन्दू को पाना चाहते है, इसके लिए शिक्षा देना चाहते हैं । मानव में तीन मौलिक गुण है 1. संस्कार अनुषंगी 2. कल्पनाशीलता तथा 3. कर्मस्वतंत्रता । यह सतत चलने वाली चीजें है । इसे तय करने का प्रयास करते हैं । मानव के अंदर देखते हैं । जीवन की कल्पना करते हैं जीने का काम शरीर को ध्यान में रखकर करते हैं। अपनी शरीर परंपरा को बनाकर रखते के लिए जीते हैं । मानव के लिए यह जरूरी नहीं है । खुद को ऐसा लगता है कि इससे सुख मिलने वाला नहीं है । मानव तृप्ति के लिए जीता है । मानव जीवन की तृप्ति जीव परंपरा को कोर में रखने के लिए जीता है । इसमें सफलता नहीं मिली है । हम लोग शरीर परंपरा को बनाकर रखे हैं । जीवन में तृप्ति होनी चाहिए । शरीर बहुत बड़ा मुद्दा नहीं है । मानव को पता है कि वह बहुत बडा है। हाथी जैस बड़े जानवर को भी काबू में कर सकता है । हम लोग लंबे समय से करते आ रहे हैं । शिक्षा में यह बात होनी चाहिए । यदि समझ में ध्यान दे तो कल्पनाशीलता का तृप्ति बिन्दू व कर्मस्वतंत्रता का तृप्ति बिन्दू बच्चों में दिखता है । बच्चों में तीन चीजें होती है –

1. वह न्याय का याचक है ।
2. सही करना चाहता है ।
3. सत्य वक्ता है ।

बच्चे याचक है न्याय नहीं जानता । सीखना चाहता है । सही नहीं पता पर सत्य वक्ता है । सत्य का पता नहीं होता । न्याय की समझ नहीं होती लेकिन न्याय चाहता है । न्याय की समझ हम लोगों से आएगी । सही करना चाहते हैं । वह चलने को सही मानता है भले ही वह गिरता है । कुछ चीजें हैं जिसे वह करने की कोशिश

करता है लेकिन उनके बारे में पता नहीं होता । बच्चे वहीं बोलते हैं जो उसे सिखाया जाता है। यदि हम सत्य बोलेंगे तो बच्चे सत्य बोलेंगे लेकिन यदि हम गलत बोलेंगें तो बच्चे भी गलत (झूठ) बोलना सीखते हैं । सहीं करेंगे तो बच्चों में सही करने की प्रवृत्ति होगी । बच्चा सत्य वक्ता होता है । झूठ बोलना बच्चा नहीं जानते । हम ही उसे सिखाते हैं । सत्य क्या है उसे पता नहीं । हमारी समझ नहीं है इसलिए जो दिखता है उसे ही समझ पाते हैं देख पाते हैं । जो दिखता है वा हो ऐसा नहीं है । हमारे बनाए हुए अपेक्षित मूल्य में । शिक्षा के पूरे कार्यक्रम में उपरोक्त तीनों को ध्यान में रखना चाहिए । कल्पनाशीलता, कर्मस्वतंत्रता एवं संस्कार अनुषंगी यह बच्चे की पूंजी होती है । जानबूझकर गलती नहीं करता । सत्य को पा लेने के बाद गलती नहीं करता । यदि तैरना सीख गया है तो डूबेगा नहीं । सही चीज सीखने के बाद गलती नहीं करता है। यह आधार हमारी शिक्षा निति का है । गलती को रोकने के लिए दंड एवं लाभ का सहारा लिया जाता है । इसी प्रकार हमारी धार्मिक मान्यता या धारणा है कि बच्चा गलती करेगा ही । यह प्रयोग सफल नहीं रहा कि बच्चे सबकुछ जानते ही हैं ।

परिवार परंपरा एवं शिक्षा का दायित्व है कि वह इसको पूरा करे कि 1. वह न्याय का याचक है । 2. सही करना चाहता है । 3. सत्य वक्ता है । सही को समझाने का उपर्युक्त तीन कुंजी है। कोई दूसरा नहीं कह समझा है कि यह नहीं समझा है । मैं केवल कल्पना करता हू । यह तय स्वयं करेगा । स्वमूल्यांकन ही होता है। मूल्यांकन कोई दूसरा नहीं कर सकता । और मूल्यांकन सतत् चलते रहता है । बच्चे शिक्षक का तथा शिक्षक बच्चे का मूल्यांकन करता है । अभी हमने मूल्यांकन प्रक्रिया को बंद करके रखा है इसे खोलने की आवश्यकता है । अभी केवल स्मरणशक्ति का ही मूल्यांकन होता है कि कौन कितना लिखा है, कितना याद किया है । बच्चों को यह नहीं बताते कि जो पढाया जा रहा है उसका उनके जीवन में क्या उपयोगिता है । चूंकि उसे उसकी उपयोगिता नहीं बताया जाता इसलिए बच्चे सीखना नहीं चाहते, उनकी रूचि नहीं होती । यदि उसकी उपयोगिता बता दी जाए तो बच्चे रूचि से पढते हैं तथा समझते हैं । हम जो भी चीजें पढ़ते हैं उसे भूल जाते हैं क्योंकि उसकी उपयोगिता हमारे जीवन में नहीं होती ।

शिक्षा में तीन चीजें होनी चाहिए – 1. सूचना 2. सीखना 3. समझना । शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है । चाहे प्रायोगिक हो या थ्योरी केवल सूचना का ही काम हो रहा है । आज की शिक्षा में समझने वाला पार्ट बिल्कुल खाली है। सबसे जरूरी चीज समझना है लेकिन यही शिक्षा से गायब है। समझने का पूरा होना चाहिए, सीखना थोडा होना चाहिए तथा सूचना का काम उससे भी कम में चल जायेगा । क्योंकि सारी जिंदगी व्यक्ति सूचना इकट्ठी करते रहता है, यह विशाल है इसको शिक्षा से बाहर भी कर सकता है ।

बच्चों में तीन चीजें आती है –

1. आज्ञापालन
2. अनुशासन
3. स्वअनुशासन

छोटे बच्चे आज्ञापालन करते हैं । जो चीज बोला जाए उसका पालन करते हैं । थोडा बडा होने पर उसमें अनुशासन लागू होता है । लेकिन अनुशासन लागू करते समय दंड एवं लोभ का सहारा नहीं लेना चाहिए । अनुशासन प्रदान करते समय उस चीज को स्वयं भी करना चाहिए । क्योंकि जो हम सिखाते हैं उसका बच्चा अनुशरण भी करता है । अतः जैसा हम करेंगे बच्चा वैसा ही करेगा । जो देखता है उसे देखकर अनुशरण करता है । जब बच्चा बडा हो जाता है तो उसमें स्वअनुशासन आ जाता है । उसे स्वयं सही या गलत का फैसला करने देना चाहिए ।

कक्षा 5 तक आज्ञापालन

कक्षा 10 तक अनुशासन

कक्षा 11 से स्वअनुशासन लागू करना चाहिए । यह शिक्षा विधि में होनी चाहिए । स्कूल में केवल समझने व सीखने का काम होना चाहिए । विज्ञान केवल सूचना देता है तकनीक नहीं देता । विज्ञान में तकनीक को ध्यान में रखकर सीखने का काम होना चाहिए । ऐसा नहीं होने से बच्चे भूल जाते हैं । शिक्षा का पूरा उद्देश्य मानने से जानने तक का सफर है । मानव का लक्ष्य है समाधान, समृद्धि, अभय एवं सहअस्तित्व । समाधान है इसको देख भी पाते हैं । इसको देख नहीं पाते इसलिए समस्या आती है। संबंध को पहचानना ही समाधान है। शिक्षा का कार्यक्रम समाधान हो या समाधान के लिए शिक्षा । शिक्षा के द्वारा क्या होना चाहिए –

1. स्वयं में विश्वास । पद, धन आदि
2. श्रेष्ठता का सम्मान । पद, धन आदि
3. प्रतिभा में संतुलन । ज्ञान, विवेक, विज्ञान
4. व्यक्तित्व में संतुलन । आहार, विहार, व्यवहार
5. व्यवहार में सामाजिक । न्याय
6. व्यवसाय में स्वावलंबन ।

अभी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य उपर्युक्त केवल चार बिदू है । श्रेष्ठता का सम्मान का मतलब है– श्रेष्ठता की पहचान होना । किसी के पद, धन आदि ये श्रेष्ठता साबित नहीं होना चाहिए । प्रतिभा में संतुलन का मतलब है ज्ञान, विवेक, विज्ञान आदि के बारे में व्यवहार तीनों चीज होता है तो प्रतिभा में संतुलन होता है । शरीर में स्वास्थ्य से संबंधित चीज विहार होता है। जो व्यक्ति स्वयं के लिए जी रहा है, जो व्यक्ति समाज के लिए जी रहा है, जो सभी के लिए जी रहा है, वह सहअस्तित्व के लिए जी रहा होता है।

ज्ञान – अस्तित्व एवं सहअस्तित्व ।

विवेक– व्यवहार के नियम, जीवन व शरीर के बारे में समझ ।

विज्ञान – विधि

किसी वस्तु या साधन को प्राप्त करने की विधि ही विज्ञान है। प्रकृति में नियम निश्चित है । निश्चित व्यवस्था है । लेकिन मानव में निश्चित नहीं है । व्यवस्था को समझने के बाद उसके उपर करर्य करते हैं । शिक्षा में समझने वाली बात नहीं है । धरती पर नियंत्रण की बात केवल आर्थिक रूप से ही है ।

जो व्यक्ति विनाश के कार्य में लगे हैं, बम बनाते हैं, गन बनाते हैं उसे सम्मान व ईनाम मिलता है । लेकिन जो अनाज पैदा करते है उसको कोई पूछने वाला नहीं होता । आदमी सबसे काम युद्ध के लिए कर रहे हैं । मानव का कार्यक्रम मानवकृत व्यवस्था में होता है । पदार्थ अवस्था में – नियम होता है । प्राणवस्था में नियंत्रण होता है । जीव अवस्था में संतुलन होता है । तथा ज्ञान अवस्था में व्यवस्था होता है । व्यक्तित्व में संतुलन शिक्षक के लिए अति आवश्यक है। यदि यह उसके पास नहीं हो तो बच्चे को वह कैसे दे सकता है? क्योंकि जो जिसके पास रहता है उसे बांटता ही है । शिक्षक का व्यक्तित्व बच्चों पर जाता है । यदि उसके पास नहीं है तो वह बच्चो पर नहीं आएगा । यह पुस्तक से नहीं आता । छोटे बच्चों में शिक्षक के प्रति सबसे अधिक आदर व सम्मान होताा है । बड़ी कक्षाओं में जाने पर यह देखने को नहीं मिलता । क्यों? क्योंकि बच्चा देखताा है कि वह क्वालिटि उसमें है ही नहीं जिसके लिए मैं उसे सम्मान देता हूॅ या वह चीज ही नहीं जो वो मुझे दे सके । व्यवहार में सामाजिक होना चाहिए । इसमें एक बात ध्यान में रखना चाहिए कि नौकरी तो बहुत कम है इसलिए बच्चों को इसके लिए बताया जाय । यह वह जगह है जहां पढ़ाई के बाद लगना चाहिए कि वह कुछ कर सकता है। आज बच्चे के पास इतनी पढ़ाई के बाद भी विश्वास नहीं होता है । अतः पाठ्यक्रम नौकरी पाने के लिए नहीं होना चाहिए बल्कि आत्मनिर्भर बनाने के लिए होना चाहिए, विश्वास पैदा करने के लिए होना चाहिए । इस मानसिकता से कि वह जी सकता है। बच्चे के मन में यह बात नहीं आनी चाहिए कि उसे काम नहीं करना है उसे नौकरी करना है । पढ़ाई सिर्फ नौकरी के लिए नहीं होनी चाहिए । अतः शिक्षा में यह व्यवस्था होनी चाहिए कि बच्चे के मन में यह आए कि वह श्रम कर सकता है । दुख इसलिए नहीं होता कि श्रम करना है बल्कि दुख इसलिए होता है कि हम उसे स्वीकार नहीं पाते हैं। नौकरी करने पर भी श्रम ही करना पड़ता है लेकिन वहां स्वीकार्यता है इसलिए खुशी मिलती है । लेकिन वहीं श्रम यदि स्वीकृति के साथ बाहर भी करें तो भी उतना ही खुशी मिलेगी । बच्चा डाक्टर या इंजिनियर बनने के लिए तैयार रहता है लेकिन उसे यह मालूम नहीं होता कि वह कैसे करना होगा, कहां करना होगा । श्रम तो सभी करते हैं चाहे वह इंजिनियर हो चाहे डाक्टर हो चाहे मजदूर हो । लेकिन जो श्रम करते हैं उसे स्वीकार नहीं पाते इसलिए समस्या आती है । शिक्षा के माध्यम से यह दी जानी चाहिए जो कार्य उसे करना है उसके लिए उसे करना क्या होगा । उसे शारीरिक एवं मानसिक रूप में तैयार करना चाहिए ।

परिवार ऐसी जगह है जहां वह जीवन पर्यन्त जीता है । इसलिए परिवार क्या है ? कैसा होता है ? व्यवस्था क्या है ? यह सिखाना होगा । ऐसी बातें भी शिक्षा व्यवस्था में होनी चाहिए ।

ऐसे कुछ बिन्दू लगभग 116 हैं जिसे शिक्षा में शामिल किया जाना है । संलग्न है ।

मानव की मुख्य आवश्यकताएं निम्नलिखित है –

1. आहार
2. आवास

3. अलंकार (वस्त्र)
4. दूरश्रवण
5. दूरदर्शन
6. दूरगमन

उपर्युक्त में बिंदू 1 से 3 तक सामान्य आवश्यकता हैं तथा बिन्दू 4 से 6 आकांक्षाएं है । 1–3 के बिना जिंदगी नहीं चल सकती । लेकिन शेष तीन के बिना भी जिंदगी चल सकती है । प्रथम तीन मानव की मुख्य आवश्यकता है। यह हर व्यक्ति के लिए एक समान है । इसलिए हर व्यक्ति की भागीदारी होनी चाहिए । 4–6 गति को बढ़ाने वाला है । इसके बिना भी व्यक्ति जी सकता है । विज्ञान के चमत्कार इन्हीं में है । इस प्रकार की टेक्नालाजी इन्ट्रोड्यूस करें कि बच्चा इसमे अपनी भूमिका को खोजे । जहां रह रहे हैं वहां कोई कार्य नहीं हो रहा है । इससे व्यक्ति उसके बारे में नहीं सोच रहा है। क्योंकि बेसिक समझे नहीं उसके उपर ध्यान नहीं दिया गया । टेक्नालाजी की समझ विकसित की जाए । रोजमर्रा की जिंदगी में काम आने वाली चीजों पर ध्यान दिया जाए । इसके अलावा शिक्षा व स्वास्थ्य पर भी ध्यान दिया जा सकता है । तकनीकी उत्पादन जैसे– गुड बनाने की मशीन, इलेक्ट्रानिक घंटी, हीटर, टी.वी., वायरिंग इत्यादि चीजों का ज्ञान भी शिक्षा के माध्यम से कराया जाए । जिससे बच्चों में विश्वास आए कि वह छोटी मोटी चीजों को घर में ही कर सकता है । इन सबमें शिक्षक को भी एक्सपर्ट होना होगा । यदि शिक्षक इसमें एक्सपर्ट होंगे तो वह बच्चों को भी वह चीज दे पायेंगे । शिक्षक को इसमें पारंगत होना होगा ।

वास्तविकता में अर्थ (स्थिति) होता है । शब्द में अर्थ नहीं होता है । किसी ईकाइ का सार्थक होता है तो गुणात्मक भाषा का ज्यादा उपयोग होता है । गणित भाषा अर्थों में ज्यादा होता है। इसे पूरा होने को गणित भाषा कहते हैं । दो चीजों की परस्परता को गुणात्मक भाषा से ही बताया जा सकता है । इसी प्रकार कारणात्क भाषा होती है जैसे सुख, तृप्ति आदि के बारे में बताने के लिए प्रयोग किया जाता है । तीन प्रकार की भाषा से किसी भी चीज का पूर्ण वर्णन किया जा सकता है –

1. गुणात्मक भाषा
2. गणित भाषा
3. कारणात्मक भाषा

मानव के सुखी होने के तरीके को विधि कहते हैं । मानव के दुखी होने के तरीके को निषेध कहते हैं । वास्तविकताओं को समझने के लिए लिखना, पढना, सुनना । जीवन के अधिकांश समय में/जगहों में सफल नहीं हो पाते । मानव मूल रूप मे गलती नहीं करना चाहता । आवश्यकता पूर्ति के क्रम में कुछ करता है जिसे लोग गलती के रूप में पहचानते हैं ।

मनुष्य की दो प्रकार की आवश्यकता होती है –

रोटी, कपडा, मकान	विश्वास, सम्मान, सुख
शरीर की आवश्यकता	मन की आवश्यकता
भौतिक है	भौतिक नहीं है
भार है	भारहीन है
परिवर्तनशील है	शास्वत है
आवश्यकतानुसार है	निरंतर
क्षणिक है	निरंतर
श्रमपूर्वक उत्पन्न	सही कार्य सही व्यवहार

उपर्युक्त में देखते हैं तो दाया पक्ष शरीर की आवश्यकता है जिसकी आवश्यकता केवल शरीर को होती है । लेकिन दाया पक्ष को देखने से पता चलता है कि इसकी आवश्यकता शरीर के किसी अंग विशेष को नहीं होती है । इसलिए इसे शरीर से अलग माना । इसे हमने मन या जीवन नाम दिया । यह शरीर से बिल्कुल अलग है । जीवन की शरीर को चलाता है। इसका अनुभव भी किया जा सकता है । किसी की हिनता ही सम्मान है। दूसरों की हिनता को मैं सम्मान मानता हूँ । अपने अहंकार का पोषण ही सम्मान है ।

सुख – निरंतर स्वीकृति का भाव

↓

तालमेल स्थान, परिस्थिति

↓

अंग अवयव में सामंजस्य

↓

व्यवस्था

↓

जीना / समझना / समझाना

↓

समाधान

↓

जो जैसा है वैसा पहचानना

↓

निरपेक्ष विश्वास

वस्तु में निरंतर सुख – लोभ
मानव में निरंतर सुख – मोह
इन्द्रियों में निरंतर सुख – काम

पढ़ना लिखना बंद करने की आवश्यकता है । अध्ययन अध्यापन की आवश्यकता है । अध्ययन का मतलब है – अधिष्ठान की साक्षी में स्मरणपूर्वक किया गया प्रयास। अधिष्ठान का मतलब है सही के प्रकाश में अर्थात जो जैसा है वैसा ही ।

शब्द– एक ध्वनि है जो किसी वास्तविकता को अर्थ स्पष्ट करने के लिए उपयोग किया जाता है ।

किसी शब्द के बारे में अध्ययन करते हैं । किसी भी शब्द में तीन चीजें होती है –

शब्द	अर्थ उपयोगिता मूल्य मौलिकता	वास्तविकता निरंतरता स्वयं में व्यवस्था होना / धर्म / स्वरूप
पानी	प्यास बुझाना	H_2O
समाधान	जो जैसा है वैसा पहचानना	चार अवस्थाएं
सुख	स्वीकृति	समझ / इच्छा / विचार कार्य / व्यवहार / फल
भ्रम	अन्यथा मान लेना	x
दुख	तालमेल न होना	x
अंधेरा	प्रकाश की कमी	x

आनंद – यह स्वीकृति होना कि समझ गया हूँ एवं इसकी निरंतरता ।
संतोष – इंद्रियों में स्वीकृत तृप्ति ।
शांति – विचार में तृप्ति ।

उपर्युक्त के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि –
संसार में प्रकाश ही प्रकाश है ।
संसार में सुख ही सुख है ।
संसार में समाधान ही समाधान है।
संसार में अंधेरा, भ्रम, दुख का अस्तित्व नहीं है ।

शिक्षा की परिभाषा क्या है ? शिक्षा का मतलब है होने का अध्ययन। जैसा है वैसा जानना । उत्वाहपूर्वक जीना ।

भाषा की परिभाषा है – भाव की अभिव्यक्ति । जो भाव को व्यक्त करे वही भाषा है ।

अनुभव – जो जैसा है वैसा पहचाता हूँ वहीं अनुभव है । शास्वत वास्तविकता का होना ।

मानव के संप्रेषण के चार माध्यम है – 1. भाव 2. भंगिमा 3. भाषा व 4. अंगहार ।

हाने का मतलब है – रूप, गुण, धर्म व स्वभाव ।

मानव का तीन भाषा है – 1. गणितात्मक 2. गुणात्मक 3. कारणात्मक

गणितात्मक भाषा – तार्किक । रूप व मात्रा का वर्णन ।

गुणात्क भाषा – व्यवहारिक । एक ईकाई से दूसरे ईकाई का प्रभाव ।

कारणात्मक भाषा – तात्विक । मूल में होने का प्रयोजन ।

उपर्युक्त तीनों से ही किसी होने या भाव को संप्रेषित कर पाते हैं । जीने के लिए तीनों भाषा की आवश्यकता होती है । यह मानव भाषा है ।

संवेदना मानव में होता है । पांच इंद्रियों के एक साथ अनुभव को संवेदना कहते हैं । व्यक्ति में संवेदना समाप्त हो जाए यह असंभव है । सर्व शुभ में ही मेरा शुभ समाया है । जितना संबंध का विस्तार होगा सुख उतना ही बढ़ेगा । जितना सुख का विस्तार होगा उतना ही समाधान का विस्तार होता है । दुख, क्लेश, अंधेरा आदि की चर्चा की आवश्यकता नहीं है। इनके समाधान की चर्चा की जरूरत है । सभी परेशानियों का जड़ समाधान का न होना है । गरीबी है नहीं हम शिक्षा के द्वारा अमीर बनने को समझ नहीं सके हैं । साधन पर्याप्त है तथा मानव में क्षमता असीम है केवल समझ बनाने की आवश्यकता है ।

शिक्षा का मानवीकरण । मानव का अध्ययन ही शिक्षा का मानवीकरण है। चेतना विकास मूल्य शिक्षा । स्वयं को शरीर मानते हैं तो जीव चेतना में जीते हैं । जीव चेतना से मानव चेतना में संक्रमण ही शिक्षा की मानवीकरण है । मानव की दो आवश्यकता है – 1. शरीर की आवश्यकता तथा 2. जीवन की आवश्यकता । दोनों आवश्यकताओं को पूरा कर सके यह आवश्यकता है । शिक्षा केवल नौकरी के लिए होना चाहिए या शिक्षा समृद्धिपूर्वक जीने के लिए । शिक्षा समृद्धिपूर्वक जीने के लिए होना चाहिए । अपनी आवश्यकता को पहचानने की जरूरत है । मानव के डिजाईन को समझने पर यह पता चलता है कि मानव में समाधान की मूलभूत आवश्यकता है ।

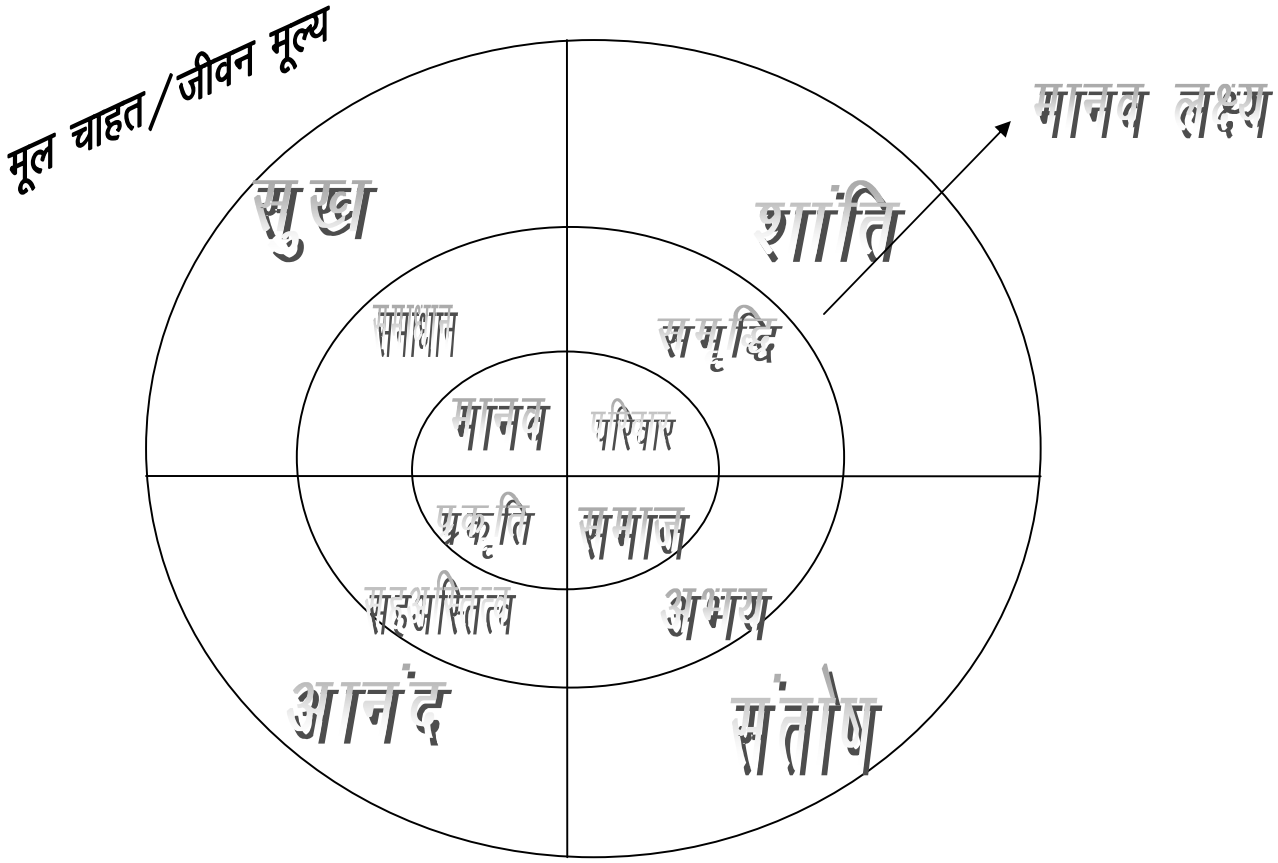

स्वयं का स्वयं से तालमेल–

समझना के स्तर पर	–	आनंद
इच्छा के स्तर पर	–	संतोष
विचार के स्तर पर	–	शांति
आशा के स्तर पर	–	सुख
कार्य/ व्यवहारके स्तर पर	–	तृप्ति

गरीबी की परिभाषा – साधन विहिन, दुखी दरिद्र
अमीर की परिभाषा – साधन संपन्न, दुखी दरिद्र
समृद्धि की परिभाषा– साधन संपन्न, सुखी समृद्ध

मानव का केवल दो ही प्रश्न है – 1. क्यों जीना है ? 2. कैसे जीना है ?

कैसे जीना है ?
1. स्वयं में विश्वास पूर्वक जीना ।
    क. श्रेष्ठता का सम्मान
    ख. प्रतिभा में विश्वास

ग. व्यक्तित्व में विकास
घ. समाज में उपयोगिता
ड़. व्यक्तित्व व प्रतिभा में विकास

2. संबंधों में विश्वासपूर्वक जीना ।
मानव व मानव के बीच संबंध की पहचान, अध्ययन, अखंड समाज व्यवस्था

3. शरीर में स्वास्थ्य ।
शरीर अध्ययन, पोषण अध्ययन, ऋतु का अध्ययन

4. परिवार में समृद्धि ।
सहअस्तित्ववादी प्रौद्योगिकी का अध्ययन, उत्पान / प्रबंधन संबंधी अध्ययन

5. सार्वभौम व्यवस्था ।
सार्वभौम मानवीय संविधान

राजनीति – केन्द्र शासित अव्यवस्था
टाप टू बॉटम
दंड / प्रलोभन
अव्यवस्था
जिंदा रहना है

राज्यनीति – स्व नियंत्रित
बॉटम टू अप
प्रेरणा / प्रोत्साहन
समाधान
जीना है

1. हर मानव की भौतिक आवश्यकता निश्चित / सीमित है ।
2. हर मानव में आवश्यकता से अधिक उत्पादन करने की असीम क्षमता है ।
3. प्रकृति में साधन पर्याप्त है । इसलिए हर मानव समृद्धिपूर्वक जी सकता है ।
4. हर मानव की मूल्यात्मक (भाव) आवश्यकता असीम है।
5. हर मानव में समझने की क्षमता असीम है ।

blfy, gj ekuo lef) iod th ldrk g A

&&000&&